अर्हम्

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2015) | दिनांक 18.12.2015

द्वितीय वर्ष : प्रथम प्रश्नपत्र | पूर्णांक – 100

जैन तत्त्वप्रवेश (प्रथम खंड) – 30

प्र.1 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें – 15

(क) सामान्य गुण किसे कहते हैं? प्रकारों का वर्णन करें।

(ख) षट्–द्रव्य द्वार लिखें।

(ग) भाव किसे कहते हैं? क्षायोपशमिक भाव की परिभाषा व अवस्थाओं का वर्णन करें।

(घ) सात वेदनीय कर्मबंध व दर्शनावरणीय कर्मबंध के कारण लिखें।

(ङ) निर्जरा किसे कहते हैं? भेदों की व्याख्या करें।

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 15

(क) नामकर्म किसके समान है? नामकर्म बंध के कारण लिखें।

(ख) ज्ञानावरणीय कर्म व दर्शनावरणीय कर्म के भेद लिखें।

(ग) जीव के छह भेद व चौदह भेदों के नाम लिखें।

(घ) आत्मद्वार या परमात्मद्वार लिखें।

(ड.) विशेष गुण क्या है भेदों के नाम लिखें।

(च) द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव–गुण द्वार में आस्त्रव निर्जरा व पुद्गल की व्याख्या करें।

(छ) पारिणामिक भाव क्या है? कितने प्रकार का है? अजीवाश्रित पारिणामिक भेदों के नाम लिखें।

प्रतिक्रमण – 20

प्र.3 निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 10

(क) ईर्यापथिक–सूत्र 'अथवा' चतुर्विंशति–स्तव शुद्ध लिखें।

(ख) सूत्र सहित सामायिक सूत्र 'अथवा' अचौर्य अणुव्रत के व्रत लिखें।

प्र.4 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) आलोचना सूत्र लिखें (ख) जीव–योनि पाठ (ग) सम्यक्त्व के भूषण (पद्य)

(घ) अठारह पाप–स्थान (ड) संलेखना के अतिचार (च) अहिंसा अणुव्रत के अतिचार

कर्म–प्रकृति – 25

प्र.5 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 15

(क) अशुभ नाम कर्म भोगने के कितने हेतु हैं? नाम लिखें।

(ख) दर्शनावरणीय कर्म की स्थिति, अबाधाकाल, लक्षण एवं कार्य लिखें।

(ग) नामकर्म की पिंड प्रकृतियों के नाम लिखें। संहनन व संस्थान के भेद की व्याख्या करें।

(घ) ज्ञानावरणीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

(ङ) दर्शन–मोह की प्रकृतियों का कार्य एवं स्थिति का वर्णन करें।

प्र.6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) नो कषाय की प्रकृतियाँ अर्थ सहित लिखें।

(ख) आयुष्य कर्म को परिभाषित करते हुए तिर्यंच व देव आयुष्य बंध के हेतु लिखें।

(ग) मोहकर्म का बंध, उदय, सत्ता व उपशम किन–किन गुणस्थानों तक होता है?

(घ) कर्म के विपाकोदय में कार्यकारी निमित्त लिखें।

(ङ) कर्म की कितनी अवस्थाएँ हैं? नाम लिखें व निद्यत्ति और निकाचना को स्पष्ट करें।

(च) वेदनीय कर्म की स्थिति व अबाधाकाल लिखें।

गीतिका – 10 (कर्मों की संज्झाय)

प्र.7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें – 8

(क) ''कर्म हवाल किया.....घर पाणी रे'' (ख)''दधिवाहन.....ए चाला रे''

(ग) ''इम अनेक खंडया.....महाराजा रे'' (घ) ''सुभूम नामे.....राख्यो रे''

प्र.8 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें – (एक शब्द या एक लाईन) 2

(क) कर्मों के कारण भगवान् महावीर कहाँ उत्पन्न हुए?

(ख) राजा सगर क्यों दुःखी हो गया?

(ग) बारहवां चक्रवर्ती कौन था?

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 15

प्र.9 आठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए – (प्रत्येक में से दो–दो प्रश्न) 12

पच्चीस बोल – (क) सत्रहवां (ख) तीसरा (ग) दसवां

पच्चीस बोल की चर्चा – (क) तेरह दण्डक किसमें? (ख) जीव के छह भेद किसमें?
(ग) सात आत्मा किसमें?

पच्चीस बोल चतुर्भंगी – (क) आत्मा किस कर्म का उदय?
(ख) किस शरीर के जीव कम, किस शरीर के जीव अधिक?
(ग) इन्द्रिय जीव या अजीव?

तत्त्वचर्चा – (क) पाप और पापी एक या दो? (ख) अरहंत भगवान देवता या मनुष्य?
(ग) जीवास्तिकाय छः में कौन? नौ में कौन?

प्र10 कोई एक पद्य लिखें। 3

(क) नव तत्त्व ना.....घणी भोलाई रे।

(ख) गिरिवर गिरिवर.....मधुर न स्वाद।।